

नौकरी की किताब

सत्र 1: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार

जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1 है: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार।

परिचय [00:24-2:06]

नमस्ते, मैं जॉन वाल्टन हूँ। मैं व्हीटन कॉलेज में ओल्ड टेस्टामेंट पढ़ाता हूँ। मैं लगभग 15 वर्षों से यहाँ हूँ। इससे पहले, मैंने मूडी बाइबल इंस्टीट्यूट में पढ़ाया, जहाँ मैंने 20 वर्षों तक पढ़ाया। मैंने अपनी पीएच.डी. की। सिनसिनाटी में हिब्रू यूनिवर्सिटी कॉलेज में काम किया, जिसने मुझे उन चीजों के लिए अच्छी तरह से तैयार किया जो मैं करता हूँ। मूलतः, मैं एक टेक्स्ट व्यक्ति हूँ; यानी, मैं ग्रंथों का विश्लेषण करता हूँ, चाहे वह हिब्रू ग्रंथ हों या प्राचीन निकट पूर्व के ग्रंथ हों। मैं बाइबल को बेहतर ढंग से समझने में हमारी मदद करने के लिए उन्हें एक साथ लाने का प्रयास करता हूँ।

हम एक साथ नौकरी की पुस्तक को देखने जा रहे हैं। नौकरी की किताब एक बहुत ही कठिन किताब है। यह अद्वितीय है, न केवल पुराने नियम के पन्नों में बल्कि संपूर्ण प्राचीन विश्व में। नौकरी की किताब जैसा कुछ भी नहीं है। हालाँकि निश्चित रूप से, कुछ चीजें हैं जो किसी न किसी बिंदु पर इसके साथ ओवरलैप होती हैं।

हम पुस्तक को समग्र रूप से समझने का प्रयास करेंगे, साथ ही पुस्तक को इसके विभिन्न भागों में भी समझने का प्रयास करेंगे। तो हम इसी पर काम करेंगे जब हम नौकरी की किताब के बारे में एक साथ सोचेंगे और यह हमें क्या प्रदान करती है।

तो चलो शुरू हो जाओ। मैं उन कुछ समस्याओं के बारे में बात करके शुरुआत करना चाहता हूँ जिनका सामना हम नौकरी की किताब से निपटते समय करते हैं। चारों ओर व्याख्या की समस्याएँ हैं, और गलत विचार हैं। अय्यूब की किताब में कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में लोग सोचते हैं जो उन्हें शुरू से ही गलत रास्ते पर ले जाती हैं। इसलिए, हम इस श्रृंखला की शुरुआत में ही उन्हें चुनना चाहते हैं और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहते हैं कि हमारा लक्ष्य सही दिशा में है।

अय्यूब क्या कहता है? [2:06-3:32]

निपटने वाली पहली समस्या यह है कि पुस्तक वास्तव में क्या कहती है? अय्यूब की पुस्तक में हिब्रू पुराने नियम में सबसे कठिन हिब्रू है। यह एक समस्या रही है। ऐसे कई शब्द हैं जो हिब्रू बाइबिल में केवल एक बार आते हैं जिनका सामना हमें जॉब की पुस्तक में मिलता है। कठिन वाक्यविन्यास है। शब्दों के अर्थ समझने और उनके प्रयोग में तमाम तरह की दिक्कतें आती हैं। तो, हमारा पहला काम एक बहुत ही कठिन हिब्रू किताब का अनुवाद करना है।

एक बार भी हम अनुवाद की बात पर पहुँच जाएँ तो हमें साहित्य के बारे में प्रश्न पूछना ही पड़ेगा। लेखक ने पुस्तक को कैसे पैकेज किया? इसे कार्यान्वित करने के लिए आपने इसे एक साथ कैसे रखा?

कुछ लोगों ने सोचा है कि नौकरी की किताब एक पैचवर्क रजाई है, कि कुछ हिस्से मूल रूप से नहीं थे, और फिर समय के साथ धीरे-धीरे अलग-अलग हिस्से जोड़े गए। और कभी-कभी, वे यह भी सोचते हैं कि वे हिस्से एक-दूसरे के विरोधाभासी हो सकते हैं। मैं उस राय का नहीं हूँ। मैं अय्यूब को एक एकीकृत संपूर्ण सुसंगत पाठ के रूप में सोचता हूँ, लेकिन यह शाब्दिक रूप से क्या कर रहा है, इस पर विचार करने के लिए कुछ काम करना पड़ता है। लेखक ने इस पुस्तक को किस प्रकार एक साथ रखा है ताकि यह काम कर सके? और इसलिए, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम उनमें से कुछ पर नज़र डालेंगे।

दार्शनिक/धार्मिक मुद्दे [3:32-4:32]

अगली चीज़ जिससे हमें निपटना है वह दार्शनिक मुद्दों का संपूर्ण विचार है; पुस्तक जो धार्मिक बिंदु बता रही है। हम अच्छी तरह से जानते हैं कि नौकरी की किताब में, कुछ वक्ता गलत हैं। वे गलत होने के लिए ही हैं। अय्यूब के दोस्तों के पास सच्चाई नहीं है। कभी-कभी उनके पास कुछ सच्चाई होती है। कभी-कभी उनके पास काफी सच्चाई भी होती है, लेकिन वे जो कर रहे हैं वह स्वाभाविक रूप से समस्याग्रस्त है। और इसलिए, हमें यह चुनने में सक्षम होना होगा: पुस्तक का धर्मशास्त्र कैसे काम करता है? यह जो करता है वह कैसे करता है? और इसलिए दार्शनिक/धार्मिक पहलू हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

एक बार जब हम वहां पहुंच जाते हैं, तो हमें इस विषय पर आगे बढ़ना होगा, ठीक है, पुस्तक के धर्मशास्त्र के लिए ठीक है, ईसाई धर्मशास्त्र के बारे में - आज के ईसाइयों के बारे में क्या? हमें किताब कैसे पढ़नी चाहिए? इसमें हमें क्या देना है?

झूठी उम्मीदें [4:32-5:42]

अब, पुस्तक के बारे में कुछ ग़लत अपेक्षाएँ पुस्तक के वितरण को कठिन बना देती हैं। कुछ लोग यह उम्मीद करते हुए किताब पढ़ेंगे कि यह एक ऐसी किताब होगी जो उन्हें पीड़ा के बारे में बताएगी और वे कैसे समझ सकते हैं कि वे क्यों पीड़ित हैं। और वे पुस्तक के अंत तक पहुंचते हैं, और वे भगवान के भाषण पढ़ते हैं, और वे हैरान हो जाते हैं। यहाँ क्या चल रहा है? और फिर अय्यूब को ये सारी चीज़ें वापस मिल जाती हैं, और किताब ख़त्म हो जाती है।

लोग बहुत असंतुष्ट महसूस करते हैं क्योंकि वे कहते हैं कि इसने मुझे कुछ नहीं बताया। वितरित करने के लिए कौन सी पुस्तक उपलब्ध है? यदि आप यह सोचकर अय्यूब की किताब की ओर जाते हैं कि आपको इस बात का उत्तर मिल रहा है कि दुनिया में या आपके जीवन में दुख क्यों है, तो आप ग़लत कारण से जा रहे हैं। और आप निराश होने वाले हैं। यह आपको यह बताने वाला नहीं है।

1) नौकरी में परीक्षण हैं। नौकरी पर मुकदमा नहीं चल रहा है [5:42-7:48]

तो, आइए उन कुछ चीज़ों पर एक नज़र डालें जो किताब करती है और जो नहीं करती है। सबसे पहले, अय्यूब के पास परीक्षण हैं। नौकरी पर मुकदमा नहीं चल रहा है। अय्यूब सोचता है कि उस पर मुकदमा चल रहा है। उसके दोस्तों को लगता है कि उस पर मुकदमा चल रहा है, लेकिन किताब शुरू से ही यह स्पष्ट कर देती है कि अय्यूब पर मुकदमा नहीं चल रहा है। आखिरकार, यह किस प्रकार का परीक्षण होगा जब उसे पहले कुछ छंदों में दोषमुक्त कर दिया जाएगा? और जब प्रमुख पात्र पूरे रास्ते इस बात पर ज़ोर देते रहे कि यहाँ समस्या अय्यूब नहीं है। इसलिए यद्यपि अय्यूब पर परीक्षण चल रहे हैं, फिर भी वह परीक्षण में नहीं है।

अय्यूब सोचता है कि वह एक आपराधिक मामले में प्रतिवादी है, उस पर ग़लत काम करने का आरोप लगाया गया है, और उसे इसके लिए दंडित किया जा रहा है। और इसलिए, उसे ऐसा लगता

है जैसे वह उस मामले में प्रतिवादी है जहां उस पर मुकदमा चल रहा है। अय्यूब उसे बदलने का प्रयास करता है। वह इसे स्थापित करने का प्रयास करता है ताकि वह एक दीवानी मामले में वादी बन सके; यानी, वह दावा करता है कि उसके साथ अन्याय हुआ है, कि उसके साथ अनुचित व्यवहार किया गया है, और उसे कुछ मुआवजा मिलना चाहिए - दिशा में बदलाव। इसलिए, वह चीजों को बदलने की कोशिश करता है ताकि वह प्रतिवादी नहीं बल्कि वादी बन जाए। यह रणनीति में एक दिलचस्प छोटा बदलाव है। लेकिन वास्तव में, दोनों में से कोई भी सही नहीं है। हम पाठकों के रूप में इसका पता लगाते हैं, और वैसे, अय्यूब को कभी इसका पता नहीं चलता। पाठकों के रूप में हमें पता चलता है कि अय्यूब बचाव पक्ष का मुख्य गवाह है। इसलिए, वह जो सोचता है या उसके आस-पास के लोग सोचते हैं कि वह उसमें है, उससे उसकी एक अलग भूमिका है। इसलिए, याद रखें कि अय्यूब के पास परीक्षण हैं, लेकिन वह परीक्षण में नहीं है।

2) नौकरी, नौकरी के बारे में नहीं है। यह भगवान के बारे में है [7:48-9:31]

दूसरा बिंदु, कुछ लोग इस पुस्तक से शुरुआत करते हैं और वे कहते हैं कि यह नौकरी की पुस्तक है। और इसलिए, वे, स्वाभाविक रूप से, कल्पना करते हैं कि पुस्तक अय्यूब के बारे में है; यह किताब अय्यूब के बारे में है। यह। किताब भगवान के बारे में है। अय्यूब एक मुख्य पात्र है। अय्यूब एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, लेकिन यह पुस्तक अय्यूब से अधिक ईश्वर के बारे में है। पुस्तक के अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम अय्यूब के बारे में क्या सोचते हैं; यह मायने रखता है कि हम ईश्वर के बारे में क्या सोचते हैं। इसलिए, जैसे-जैसे हम किताब के पास आते हैं, याद रखें कि हम इस बात की तलाश कर रहे हैं कि यह हमें ईश्वर के बारे में क्या सिखाती है, न कि यह हमें अय्यूब के बारे में क्या सिखाती है।

हमें यह सोचकर पुस्तक के पास नहीं जाना चाहिए कि अय्यूब एक आदर्श के रूप में खड़ा होगा, या तो पीड़ा के लिए, धैर्य के लिए, बातचीत के लिए, या किसी भी चीज़ के लिए एक आदर्श। नौकरी यहां कोई रोल मॉडल नहीं है। अय्यूब एक तरह से अपने से बड़ी किसी चीज़ में फँस गया है, और उसकी प्रतिक्रियाएँ कभी अच्छी होती हैं, कभी बुरी; कभी-कभी यह बताना कठिन होता है। लेकिन यह किताब यहां नहीं है ताकि अय्यूब हमारे लिए एक आदर्श बन सके। यह एक ज्ञान पुस्तक है,

और यह हमें ज्ञान देने के लिए है, और ज्ञान अंततः ईश्वर के बारे में है। तो वह बिंदु संख्या दो थी; यह अय्यूब से अधिक परमेश्वर के बारे में है।

3) नौकरी ईश्वर के न्याय के बारे में नहीं है; यह ईश्वर की बुद्धि के बारे में है [9:31-13:05]

नंबर तीन, हम अक्सर यह सोचकर किताब पढ़ते हैं कि इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि ईश्वर का न्याय दुनिया में कैसे काम करता है। यह ईश्वर के न्याय के बारे में एक पुस्तक है जो ईश्वर के न्याय की रक्षा करना चाहती है। और फिर, मैं कहूंगा, नहीं, मुझे नहीं लगता कि ऐसा होता है। यह वह नहीं है जो यह कर रहा है। आप देखेंगे कि अंत में, जब ईश्वर अपनी बात कहता है, तो वह अपने न्याय की रक्षा नहीं करता है। वह न्याय के संदर्भ में सामने आए परिदृश्य की कभी व्याख्या नहीं करते। यदि आप अय्यूब की पुस्तक से कुछ पाने के लिए कुछ देख रहे हैं जो वास्तव में आपको ईश्वर के न्याय को समझने में मदद करता है, तो फिर, आप निराश होकर चले जाएंगे क्योंकि पुस्तक ईश्वर के न्याय की व्याख्या या बचाव नहीं करती है। परमेश्वर के विरुद्ध अय्यूब के आरोप परमेश्वर के न्याय से संबंधित हैं। पीड़ा के बारे में हमारे प्रश्न अक्सर ईश्वर के न्याय से संबंधित होते हैं, लेकिन नौकरी की पुस्तक ईश्वर के न्याय का बचाव नहीं करती है। इसके बजाय, यह उसकी बुद्धिमत्ता का बचाव करता है। यह ज्ञान ग्रंथ है, न्याय ग्रंथ नहीं। यह परमेश्वर की बुद्धि का बचाव करता है क्योंकि हम इसी पर भरोसा करते हैं।

यदि हम सोचते हैं कि यह उसके न्याय की रक्षा करता है, तो हम, हर मोड़ पर, औचित्य साबित करने, किसी तरह समझाने, बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं। और उस सब के लिए, हमें सारी जानकारी की आवश्यकता होगी। मेज पर मौजूद सारी जानकारी के बिना न्याय नहीं किया जा सकता। यदि हम अदालत में किसी फैसले और किसी प्रसिद्ध मुकदमे के बारे में सुनते हैं, तो हमारे सामने बैठकर इस बारे में बात करने से कोई फायदा नहीं है कि क्या हमें लगता है कि न्याय हुआ या नहीं, अगर हमारे सामने सभी सबूत नहीं हैं। जज के पास सबूत हैं। जूरी के पास सबूत हैं, लेकिन हमारे पास शायद ही ऐसा हो। और इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल है कि न्याय हुआ या नहीं हुआ। और भगवान के साथ, हमें कभी भी सारी जानकारी नहीं मिल सकती। हम इस स्थिति में नहीं हैं कि इस बारे में बात करने की कोशिश करें कि ईश्वर न्यायकारी है या नहीं।

वास्तव में, उस संपूर्ण फ्रेमिंग में समस्याएँ हैं। जिस क्षण हम कहते हैं कि ईश्वर न्यायकारी है, हमारा तात्पर्य यह है कि न्याय नामक कोई बाहरी श्रेणी है, और ईश्वर उसके अनुरूप है। धार्मिक रूप से, ईश्वर किसी भी चीज़ के अनुरूप नहीं है क्योंकि इससे आकस्मिकता का पता चलता है कि किसी तरह उसके बाहर कुछ है जिसे उसे मापना है। और यह भगवान के बारे में सच नहीं है। ईश्वर आकस्मिक नहीं है। तो, यह कहना कि ईश्वर महज़ एक बाहरी प्रकार का मानक हो सकता है। यह कहना बेहतर होगा कि न्याय ईश्वर से आता है। लेकिन फिर, हम कभी यह पता नहीं लगा पाते कि ये सभी मानदंड कैसे काम करते हैं। तो, उस संबंध में, पुस्तक न्याय के बारे में नहीं है। यह ईश्वर की बुद्धि के बारे में है।

4) नौकरी दुख के बारे में नहीं है; यह इस बारे में है कि ईश्वर के बारे में कैसे सोचा जाए जब हम पीड़ित होते हैं [13:05-14:33]

नंबर चार, किताब का इरादा हमें यह सिखाने का नहीं है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए। दुख हैं, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम इसे किस स्तर पर अनुभव करते हैं या इसका निरीक्षण करते हैं, यह कठिन है। हमें स्पष्टीकरण पसंद आएगा, लेकिन यह पुस्तक हमें यह जानने में मदद करने के लिए नहीं बनाई गई है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए। यह हमें यह जानने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है कि जब हम पीड़ित हों तो भगवान के बारे में कैसे सोचें। वास्तव में हमें यही जानने की जरूरत है। मैं भगवान को कैसे जवाब दूँ? क्या हम उसे दोष देते हैं? क्या हम उससे नाराज़ हो जाते हैं? क्या हम उसकी उपेक्षा करते हैं? क्या हम उससे दूर भागते हैं? हम क्या करते हैं? जब दुनिया हमारे चारों ओर गलत हो रही है तो हम भगवान के बारे में कैसे सोचते हैं? जब हमारा जीवन ढलान की ओर जा रहा है, हर चीज़ दक्षिण की ओर जा रही है; हम परमेश्वर को कैसे प्रत्युत्तर दें?

आखिरकार, यह सोचना आसान है: उसे इसे ठीक करने में सक्षम होना चाहिए। अय्यूब और उसके दोस्तों के बारे में सोचना आसान है : क्या हम इसके लायक हैं? यदि नहीं, तो क्या हो रहा है? फिर, यह पुस्तक हमें यह समझने में मदद करने के लिए है कि जब हम पीड़ित हों तो ईश्वर के बारे में कैसे

सोचें। और यह उस बिंदु पर वापस जाता है जिसे हमने पहले कहा था कि यह ईश्वर के बारे में है, अय्यूब के बारे में नहीं।

5) नौकरी उत्तर पाने के बारे में नहीं है; यह भगवान पर भरोसा करने के बारे में है [14:33-16:08]

बिंदु संख्या पाँच, बहुत बार, हम उत्तर पाने की कोशिश करने के लिए अय्यूब की पुस्तक पढ़ते हैं, ऐसे उत्तर जो हमारी अपनी पीड़ा को समझा सकते हैं; ऐसे उत्तर जो दुनिया में हमारे द्वारा देखे जाने वाले कष्टों को समझा सकते हैं। दुनिया इतनी कठिन जगह क्यों है? और इसलिए, हम सोचते हैं कि नौकरी की पुस्तक हमें उत्तर दे सकती है। हम आशा करते हैं कि। हम वास्तव में उत्तर चाहेंगे। और इसलिए, हम उत्तर की तलाश में नौकरी की किताब की ओर जाते हैं। यहीं समस्या है क्योंकि यह पुस्तक उत्तरों की तुलना में विश्वास करने के बारे में अधिक है। यदि आप सभी उत्तर जानते हैं तो आपको भरोसा करने की आवश्यकता नहीं है। जब हम नहीं जानते कि क्या हो रहा है तो भरोसा करना ईश्वर के प्रति हमारी प्रतिक्रिया है। जब हम स्वयं चीजों का पता नहीं लगा सकते हैं, तो भरोसा करना हमारी अज्ञानता और हमारे भ्रम की प्रतिक्रिया है। तब हमें भगवान की ओर मुड़ने की जरूरत है। अय्यूब की पुस्तक उत्तर नहीं देगी। यह हमें भरोसा करने के लिए प्रेरित करेगा।

6) नौकरी इस बारे में नहीं है कि कष्ट क्यों या कैसे उठाया जाए; यह हमारी धार्मिकता के बारे में है [16:08-17:24]

अंत में, नंबर छह, यह पुस्तक इस बारे में अधिक है कि धार्मिकता क्या है, न कि इस बारे में कि हम कष्ट क्यों सहते हैं। याद रखें कि पहले अध्याय में ही जो प्रश्न मेज पर रखा गया है, वह ईश्वर से पूछा गया है: क्या अय्यूब बिना कुछ लिए ईश्वर की सेवा करता है? यह वास्तव में एक प्रश्न है जो इस बारे में पूछता है कि अय्यूब की धार्मिकता को क्या प्रेरित करता है। क्या उसकी धार्मिकता सचमुच परीक्षा में खरी उतरती है? आखिरकार, यदि अय्यूब वैसा ही व्यवहार कर रहा है जैसा वह करता है, आप जानते हैं, नेक, ईमानदार, बुराई से दूर रहना, यदि वह यह सब सिर्फ इसलिए कर रहा है क्योंकि वह इससे समृद्धि और इनाम पाने की उम्मीद करता है, तो यह टिकने वाला नहीं है जब सारे अच्छे लाभ छीन लिए जाते हैं; वह तथाकथित धार्मिकता बस हवा में घुलने वाली है।

अय्यूब का संदेश [17:24-19:12]

तो, यह धार्मिकता के बारे में एक किताब है। यह हमें नहीं बताता कि कैसे कष्ट सहना है। यह हमें कष्ट होने पर भी धर्मी बने रहने की चुनौती देता है। यह हमें धार्मिक होने की चुनौती देता है क्योंकि धार्मिकता ही हमारे जीवन की विशेषता होनी चाहिए। यह हमें ईश्वर के प्रति वफादार रहने के लिए कहता है क्योंकि ईश्वर ईश्वर है इसलिए नहीं कि वह उदार है। भगवान कोई वेंडिंग मशीन नहीं है। और इसलिए, पुस्तक में यहाँ प्रश्न यह है कि क्या चीज़ लोगों को धर्मी बनने के लिए प्रेरित करती है। पीड़ा केवल वह तरीका है जिससे अय्यूब की पुस्तक में धार्मिकता का परीक्षण किया जाता है। पीड़ा यह जानने के लिए है कि अय्यूब की धार्मिकता वास्तविक है या नहीं।

इसलिए, जब तक हम किताब के अंत तक पहुँचते हैं, हमें यह पता लगाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि मैं पीड़ित क्यों हूँ? हमें यह जानने की आशा करनी चाहिए: क्या मैं सचमुच धर्मी हूँ? क्या मैं ग़लत कारणों के बजाय सही कारणों से धर्मी हूँ? क्या मेरी धार्मिकता कष्ट की कसौटी पर खरी उतरती है? किताब हमें यही जानने में मदद करेगी। अय्यूब के साथ वास्तव में यही हो रहा है।

समीक्षा: छह बिंदु [19:12-21:10]

तो, आइए मैं इन छह बिंदुओं की समीक्षा करता हूँ। अय्यूब पर मुक़दमे चल रहे हैं, लेकिन उस पर मुक़दमा नहीं चल रहा है। यह पुस्तक अय्यूब से अधिक ईश्वर के बारे में है। यह पुस्तक ईश्वर के न्याय से अधिक उसकी बुद्धि के बारे में है। यह किताब इस बारे में नहीं है कि दुख के बारे में कैसे सोचा जाए, बल्कि यह है कि जब हम दुख में हैं तो भगवान के बारे में कैसे सोचा जाए। यह पुस्तक उत्तरों से अधिक विश्वास के बारे में है। और यह पुस्तक इस बारे में अधिक है कि धार्मिकता क्या है, न कि इस बारे में कि हम कष्ट क्यों सहते हैं।

ये छह बिंदु हमें झूठी धारणाओं, ग़लतफहमियों और झूठी उम्मीदों को दूर करने में मदद करेंगे जो हमें अय्यूब की पुस्तक में हो सकती हैं। ये छह प्रश्न हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करेंगे कि पुस्तक वास्तव में क्या कर रही है। हम और अधिक स्पष्ट रूप से देख पाएंगे कि यह उन चीज़ों को कैसे कर रहा है। उम्मीदें महत्वपूर्ण हैं। यदि हम जीवन से, एक-दूसरे से, ईश्वर से, संसार से झूठी अपेक्षाएँ रखते हैं; यदि हम झूठी उम्मीदें स्थापित करते हैं, तो हमारा निराश होना तय है। इसलिए, हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि ईश्वर वास्तव में कैसे कार्य करता है, और नौकरी की

पुस्तक इसमें हमारी सहायता कर सकती है। तो, आइए पुस्तक के संदेश को समझने का प्रयास करने के लिए इसके पृष्ठों पर एक साथ नज़र डालें।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और अय्यूब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1 है: पुस्तक के बारे में व्याख्या संबंधी समस्याएं और गलत विचार। [21:10]